REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | DECEMBER – 2017

अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल में उसकी मृत्यु से पूर्व विद्रोह एवम् उनकी स्थितिः एक सामान्य विवेचना

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच के एल कालेज आफ ऐजूकेशन,
सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़, गुरूहरसहाय फिरोजपुर (पंजाब)

सारांश

अलाउद्दीन की रूग्णावस्था के कारण उसके अन्तिम समय में देवगिरी, गुजरात एवम् चिन्तोड़ में विद्रोह हुये । इन सभी विद्रोहों का महत्वाकांक्षी मलिक काफूर ने दमन करने का विफल प्रयास किया। विद्रोहों से अलाउद्दीन के अंतिम वर्षों में प्रशासन पर कमजोर पकड़ स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती है तथा इन विद्रोहों से ही खिलजी साम्राज्य की सीमाओं को पुनः निर्धारित करने के लिये इसके बाद के शासकों को गम्भीर प्रयास करने पड़े।

अलाउद्दीन के अन्तिम दिनों में इसके राज्य में अव्यवस्था फैल गयी। अलाउद्दीन रोगी[1] एवं वृद्ध होने के कारण स्वभाव से शक्की एवं कर्कश हो गया था। उसने अपने दक्षिण अभियानों के प्रमुख सेनापति एवं राज्य के सर्वेसर्वा मलिक काफूर को दक्षिण से वापस बुला लिया। क्योंकि अलाउद्दीन के पुत्र एवं पत्नी मलिका–ए–जहाँ स्वयं अपने रागरंग में मस्त रहते थे। मलिक काफूर जो कि अलाउद्दीन के अन्तिम दिनों में महत्वाकांक्षी हो गया था। सुल्तान की वृद्धावस्था, अस्वस्थता एवं समीपता का लाभ उठाकर, मलिक काफूर उसके कानों में विष घोलने लगा तथा अपने शत्रुओं के विनाश की योजनायें बनाने लगा।[2]

गुजरात में विद्रोह–

गुजरात के सन्दर्भ में मलिक काफूर ने सोची–समझी रणनीति के तहत मलिका–ए–जहाँ के भाई, खिज्र खॉ के मामा एवं श्वसुर, गुजरात के राज्यपाल अलप खॉ की शाही महल में प्रवेश करते समय, मलिक कमालुद्दीन गर्ग की सहायता से हत्या कर दी।[3]

अलप खॉ की हत्या का समाचार गुजरात पहुँचा तो वहॉ उसके निष्ठावान सैनिकों ने विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया। इस विद्रोह का समाचार सुनकर रूग्णावस्थ अलाउद्दीन क्रोध से जलने लगा उसके जीवन का सारा कार्य निरर्थक प्रतीत होने लगा, जो कुछ भी उसने जीता था वह हाथ से निकलता प्रतीत होने लगा। गुजरात में अलप खॉ के सैनिकों के विद्रोह के निम्न मुख्य कारण थे–

- ❖ अलप खॉ के स्वामी भक्त सैनिक उसके प्रति वफादार थे और जनता पर अलप खॉ का अच्छा प्रभाव था क्योंकि वह एक कुशल एवं प्रभावशाली प्रशासक था।
- ❖ अलप खॉ की हत्या का समाचार गुजरात पहुँचने पर वहॉ के सैनिक एवं जनता भली भॉति समझ गयी थी कि मलिक काफूर ने राजनीतिक क्षेत्र के प्रमुख प्रतिद्वन्दि को अपने रास्ते से हटा दिया है और मलिक काफूर ने अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने का सुअवसर प्राप्त कर लिया है।

- ❖ अलप खॉ की हत्या बिना किसी कारण की गयी और उस समय शाही परिवार के प्रमुख सदस्य मलिका–ए–जहाँ और खिज खॉ को मलिक काफूर द्वारा कैद करवा दिया गया था।
- ❖ गुजरात के विद्राहियों को यह ज्ञात हो चुका था कि सुल्तान अलाउद्दीन अपने जीवन के अन्तिम दिनों को काट रहा है और मलिक काफूर के हाथों की कठपुतली बन गया है।

इन सभी कारणों और अलप खॉ की हत्या से प्रभावित होकर इसके समर्थकों, शुभचिन्तकों एवं स्वामीभक्त सैनिकों ने अपने प्रिय प्रान्तपति के प्रति वफादार रहते हुए अपने नेता हैदर और

जीरक[4] के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया।

मलिक काफूर ने सुल्तान अलाउद्दीन से आदेश प्राप्त करके अपने विश्वस्त मलिक कमालुद्दीन गर्ग को गुजरात पर अधिकार करने और विद्रोहियों को दण्डित करने के लिये सेना सहित भेजा।[5]

कमालुद्दीन गर्ग गुजरात पहुँचा और उसका अलप खॉ के वफादार सैनिकों के साथ युद्ध हुआ। इस युद्ध में कमालुद्दीन गर्ग पराजित हुआ। उसके बहुत से सैनिक खेत रहे। विद्रोहियों ने कमालुद्दीन गर्ग को बन्दी बना लिया और कठोर यातनायें देकर उसकी हत्या कर दी।[6]

मलिक कमालुद्दीन गर्ग की पराजय एवं उसकी हत्या का समाचार सुनकर मलिक काफूर विचलित हो गया। उसने अपने जीवन के अन्तिम समय काट रहे सुल्तान अलाउद्दीन को सविस्तार युद्ध का हाल बताकर, "दीनार शहनये–पील" को एक बड़ी सेना के साथ गुजरात की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में ही सुल्तान अलाउद्दीन की (08 जनवरी 1316 ई0) मृत्यु का समाचार सुनकर वह आगे बढ़ने के लिये, नये शाही आदेश की प्रतीक्षा करने लगा।[7]

अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद नाम मात्र का शिशु सुल्तान शिहाबुद्दीन उमर मलिक काफूर की संरक्षण में गद्दी पर बैठा।[8] मलिक काफूर ने ऐनुलमुल्क मुल्तानी को, जो उस समय देवगिरि में था, सूचना भेजी कि वह शीघ्रता–शीघ्र गुजरात पर आक्रमण करे। मलिक नायब ऐनुलमुल्क मुल्तानी ने अक्षरस आदेशों का पालन करते हुये, देवगिरि से गुजरात की ओर प्रस्थान किया। किन्तु जब वह चित्तौड़ के समीप पहुँचा तो उसे मलिक काफूर की हत्या की सूचना प्राप्त हुई। ऐनुलमुल्क मुल्तानी भी अग्रिम शाही आदेश की प्रतीक्षा के लिये चितौड़ में ही एक–दो महीने के लिये स्थिर हो गया।[9]

कुतबुद्दीन मुबारक शाह ने मलिक काफूर की हत्या करके शिहाबुद्दीन उमर को गद्दी से हटा दिया तथा स्वयं सिंहासन पर बैठ गया उसने सवंप्रथम गुजरात के विद्रोह का दमन करने के लिये मलिक तुगलक को एनुलमुल्क मुल्तानी के पास चित्तौड़ भेजकर आक्रमण करने का आदेश दिया। मलिक तुगलक ने देखा कि यहॉ पर सभी अधिकारी सत्ता परिवर्तन के बाद अपने–अपने पदो के स्थायित्व की पुष्टि चाहते है। इस प्रकार मलिक तुगलक पुनः देहली गया और वहॉ से प्रत्येक अधिकारी के लिये पृथक–पृथक शाही आदेश व खिलअत लेकर आया। तत्पश्चात् सेना ने चित्तौड़ से गुजरात की ओर प्रस्थान किया।[10]

गुजरात में विद्रोहियों के नेता हैदर व जीरक को शाही सेना के आने का समाचार प्राप्त हुआ तो वह भी अपनी सेना तैयार करके युद्ध के मैदान में आ गये। ऐनुलमुल्क मुल्तानी ने युद्ध के मैदान में आकर कूटनीति का सहारा लिया। उसने विद्रोहियों की सेना के सभी अमीरों और सरदारों को पत्र लिखा कि हत्यारे और अत्याचारी मलिक काफूर की हत्या हो चुकी है, अब युद्ध करने से दोनों पक्षों का ही नुकसान होगा। शाही सेना काफी मजबूत है तथा उसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। तुम लोगों को सुल्तान कुतबुद्दीन मुबारक शाह की शरण में आ जाना चाहिये। वह तुम्हें अवश्य ही क्षमा कर देंगे। ऐनुलमुल्क मुल्तानी के इस प्रकार के पत्र व्यवहार से विद्रोही सेना के अधिकारियों पर बहुत प्रभाव पड़ा, बहुत से अधिकारी शाही सेना की तरफ आ गये।[11]

विद्रोही नेता "हैदर और जीरक" ने शाही सेना के साथ बहुत बहादुरी से युद्ध किया। विद्रोही सेना परास्त हुई क्योंकि विश्वासघाती अधिकारियों के पक्ष त्यागने से उनकी शक्ति को बहुत आघात पहुँचा था। विद्रोही नेता "हैदर व जीरक" युद्ध के मैदान से भाग खड़े हुये और सुदूर स्थिति रायों के पास शरण लेने में सफल रहे।[12] इस प्रकार ऐनुलमुल्क मुल्तानी की कूटनीति पूर्ण नीति से शाही सेना ने अन्हिलवाड़ा सहित सम्पूर्ण गुजरात पर पुनः अधिकार कर लिया ओर वहॉ शासन में स्थिरता आ गयी। मुबारक शाह ने अपने श्वसुर मलिक दीनार को जफर खॉ की पदवी देकर गुजरात का राज्यपाल बना दिया।

दक्षिण में देवगिरि का स्वतंत्र होना–

मलिक काफूर ने दक्षिण अभियानों द्वारा दक्षिण के चारों राज्यों को पददलित करके उन्हें दिल्ली सल्तनत के अधीन कर दिया था। यह सभी (देवगिरि, बारंगल, द्वारसमुद्र, माबर) राज्य अलाउद्दीन खिलजी को दिल्ली में वार्षिक कर भेजा करते थे। इस प्रकार यह चारों राज्य "दिल्ली सल्तनत" के अधीन थे।

1312–13 में राजा रामदेव की मृत्यु के बाद उसके स्वतंत्रता प्रेमी पुत्र सिंघन ने अलाउद्दीन की अधीनता मानने से इंकार कर दिया। जब अलाउद्दीन को दुर्विनीत सिंघन की स्वतंत्रता का ज्ञान हुआ तो उसने सिंघन को दण्डित करने के लिये मलिक काफूर को पुनः देवगिरि प्रस्थान का आदेश दिया।[13] मलिक काफूर ने सेना सहित देवगिरि की ओर प्रस्थान किया। सिंघन के साथ मलिक काफूर का घमासान युद्ध हुआ जिसमें सिंघन मारा गया। मलिक काफूर का देवगिरि पर पुनः अधिकार हो गया। जब तक मलिक काफूर देवगिरि में रहा वहॉ शान्ति रही।[14]

अलाउद्दीन ने अपनी अस्वस्थता के कारण दक्षिण से मलिक काफूर को वापिस बुला लिया। मलिक काफूर ने अपने स्थान पर ऐनुलमुल्क मुल्तानी को दक्षिण का राज्यपाल नियुक्त कर दिया। सिंघन की मृत्यु के बाद रामदेव का जामाता हरपाल देव देवगिरि का शासक, मलिक काफूर के सामने ही नियुक्त हो गया था (एसामी के अनुसार)। दिल्ली की असाधारण परिस्थितियों की वजह से मलिक काफूर को ऐनुलमुल्क मुल्तानी देवगिरि से वापस बुलाना पड़ा।

स्वतंत्रता प्रेमी हरपाल देव ने ऐनुलमुल्क मुल्तानी के वापस आने, और अलाउद्दीन की अधिक रूग्णावस्था का समाचार सुनकर आधिपत्य का जुऑ उतार कर फेंक दिया। आधीनता का प्रतीक शाही चौकिया को नष्ट कर दिया और

तुर्को को मार भगाया।[15] अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद तक यही स्थिति बनी रही। मलिक काफूर देहली में व्यस्त होने के कारण देवगिरि की ओर ध्यान न दे सका।

जब कुतबुद्दीन मुबारक शाह सुल्तान बना तो उसने गुजरात में विद्रोह का दमन होने के पश्चात् देवगिरि की ओर प्रस्थान करने का निर्णय लिया। किन्तु दरबारी अमीरों का यह विचार था कि यह मुहिम खतरे से खाली नहीं होगी, पहले सत्ता को सुसंगठित एवं दृढ़ किया जाना चाहिये। दरबारियों के इस प्रकार के विचार ने देवगिरि के अभियान को एक वर्ष के लिये स्थगित करवा दिया।[16]

1318 ई0 में नवयुवक सुल्तान कुतबुद्दीन मुबारक शाह ने मलिकों तथा अमीरों को लेकर देवगिरि पर आक्रमण कर दिया। देवगिरि का मार्ग सर्वविदित था, इसलिये वह शीघ्रता से देवगिरि की सीमा पर पहुँचा। हरपाल देव शाही सेना के आगमन का समाचार सुनकर भाग गया। देवगिरि पर आसानी के साथ अधिकार कर लिया गया।[17] नगर पर अधिकार कर लेने के पश्चात् सुल्तान कुतबुद्दीन मुबारक शाह ने विद्रोहियों को पकड़ने के लिये अपने प्रिय दास खुसरों खॉ को नियुक्त किया। हरपाल देव तथा उसके मंत्री राघव ने एक बड़ी सेना एकत्र कर ली थी तथा वह पहाड़ियों पर छिपकर बैठे थे। खुसरो खॉ ने उनका पीछा किया तथा युद्ध करने को बाध्य किया। हरपाल देव व राघव परास्त हुये। राघव युद्ध भूमि से भागने में सफल रहा किन्तु हरपाल देव अत्यधिक घायल होने के कारण बन्दी बना लिया गया।[18] जब विद्रोहियों को गिरफ्तार करके सुल्तान के समक्ष पेश किया तो उसने इन सभी की हत्या एवं हरपाल देव की खाल खींच कर देवगिरि के द्वार पर लटकाने का आदेश दिया।[19]

इस प्रकार समस्त मराठा राज्य एक बार फिर खिलजी वंश के अधीन हो गया और देवगिरि राज्य पुनः सुव्यवस्थित कर दिया गया। कुतबुद्दीन मुबारक शाह ने कुछ समय तक वहॉ रूकने के बाद उपयुक्त अधिकारी नियुक्त किये।

चित्तौड़ में विद्रोह–

अलाउद्दीन के अन्तिम समय में दिल्ली सल्तनत के अधीन चित्तौड़ में भी विद्रोह का झण्ड़ा खड़ा हो गया। उस समय चित्तौड़ में नाममात्र का कठपुतली शासक मालदेव था। इसे जनता का समर्थन भी प्राप्त नहीं था। जनता खिलजी साम्राज्य के आधिपत्य का जुऑ उतार फेंकने को तत्पर थी। इस कार्य में जनता की सहायता सीसोंदा के स्वतंत्रता प्रेमी शासक हम्मीर ने की। उसने जनता को विद्रोह करने के लिये प्रेरित किया तथा स्वयं भी मालदेव को निरन्तर परेशान करने लगा। इस प्रकार जनता ने हम्मीर के समर्थन से चित्तौड़ में विद्रोह कर दिया।

अलाउद्दीन अपने जीवन के अन्तिम दिनों में इस विद्रोह को देखकर विचलित हो गया और उसे अपने जीवन के सारे कार्य निरर्थक प्रतीत होते दिखे। चित्तोड़ की स्थिति अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद तक ऐसी ही बनी रही।

सन्र्दभ–

1. बरनी के अनुसार अलाउद्दीन जलोधर से पीड़ित था, तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 368। अमीर खुसरों अलाउद्दीन को ज्वर से पीड़ित बताता है जबकि फरिश्ता लिखता है कि अत्यधिक यौन संभोग के कारण उसे खतरनाक रोग हो गया था।
2. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 368।
3. फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्लाह मलिक एसामी, पृ0 339। कमालुद्दीन गर्ग उस समय सिवाना का राज्यपाल था।
4. फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्लाह मलिक एसामी, पृ0 340। बरनी गुजरात के विद्रोही नेताओं के नाम हैदर तथा बजीर देता है।
5. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 369।
6. वही, पृ0 388।
7. फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्लाह मलिक एसामी, पृ0 340।
8. फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्लाह मलिक एसामी, पृ0 343–44।
9. वही पृ0 347–48।
10. वही प ृ0 356–57।
11. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 388।
12. फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्लाह मलिक एसामी, पृ0 360।
13. फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्लाह मलिक एसामी, पृ0 334–35।
14. खिलजी वंश का इतिहास : के0एस0लाल, पृ0 200।
15. दिल्ली सल्तनत : मौ0 हबीब एवं निजामी, पृ0 253।

तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 389।
16. तारीखे मुबारकशाही : याहिया सरहिन्दी, पृ0 83।
17. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 389।
18. नुह सिपेहर : अमीर खुसरो, पृ0 194–201।
19. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, पृ0 390।
फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्लाह मलिक एसामी, पृ0 360।

सन्र्दभ ग्रन्थ सूची –

1. खाजायनुल फुतूह : अमीर खुसरो, अनुवाद प्रो0 हबीब, बम्बई 1933।
2. तारीखे फिरोजशाही : जियाउद्दीन बरनी, अनुवाद डॉ सैयद अतहर अब्बास रिजवी।
3. फुतूहुस्सलातीन : ख्वाजा अब्दुल्लाह मलिक इसामी, अनु0 आगा मेंहदी हुसेन, आगरा 1938।
4. तरीखे फरिश्ता : मुहम्मद कासिम फरिश्ता, अनु0 फिदाअली।
5. मिफताहुल फुतूह : अमीर खुसरो, सम्पादित एस0ए0 रशीद अलीगढ़।
6. साउथ इण्डिया एण्ड हर मौहमडन इनवेडर्स : के0एम0 अशरफ, लंदन, 1921।
7. स्टडीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री : एस0एच0 होडीवाल, बम्बई, 1943।
8. एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ द सल्तनत ऑफ देहली : आई0एच0 कुरैशी, लाहौर, 1942।
9. खिलजी वंश का इतिहास : डॉ के0एस0 लाल, द्वितीय संस्करण विश्व प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993।
10. दिल्ली सल्तनत : मौ हबीब एवं खलीक अहमद निजामी।
11. मध्ययुग का इतिहास : डॉ ईश्वरी प्रसाद।
12. जलालुद्दीन फिरोज खिलजी : शेख अब्दुर्रशींद
13. आदि तुर्क कालीन भारत : सै0अ0अ0 रिजवी।
14. देवलरानी खिज्र खॉ : अमीर खुसरो, अनुवाद – रसीद अहमद सलीम, अलीगढ़ 1917।
15. फतवाए जहांदरी : जियाउद्दीन बरनी, अनु0 मौ0 हबीब एवं खलिक अहमद निजामी।
16. जफरूलवाली बिमुजफ्फर वाली : हाजी उद्दबीर, सर डैनिसन।
17. नूह सिपहर : अमीर खुसरो, सम्पादित एम0 वाहिद मिर्जा।
18. मैडीवल इण्डिया : एस0सी0रे0, कलकत्ता, 1931।
19. खिलजी कालीन भारत : डॉ सैयद अतहर अब्बास रिजवी।
20. दिल्ली सल्तनत : डॉ रति भानु सिंह नाहर।

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच के एल कालेज आफ ऐजूकेशन, सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़ , गुरूहरसहाय फिरोजपुर (पंजाब)